# "त्रिविध चिकित्सा कर्म"

* त्रिविधं कर्म । पूर्व कर्म प्रधान कर्म पश्चात्कर्म चेति। (सु०सू० 5)

* शल्य चिकित्सा हेतु तीन प्रकार के चिकित्सा कर्म वर्णित हैं।

(1) पूर्व कर्म (2) प्रधान कर्म (3) पश्चात् कर्म

(1) पूर्व कर्म ⇒ (A) रोगी सम्बन्धित
(B) चिकित्सा सम्बन्धित
(C) उपकरण सम्बन्धित
(D) शल्य कक्ष सम्बन्धित

(A) रोगी सम्बन्धित ⇒ (i) रोगी परीक्षा ⇒ * त्रिविध परीक्षा
* षड्विध परीक्षा

" दर्शनं स्पर्शनं प्रश्न परीक्षा त्रिविधं स्मृतः।"

" षड्विधो हि रोगाणां विज्ञानोपायः,
तद्यथा पञ्चभिः श्रोत्रादिभिः प्रश्नेन चेति।"

(ii) भौतिक परीक्षा (Physical examination)
(iii) स्त्रोतो की परीक्षा (Systemic examination)
(iv) रोगी बल परीक्षा, रक्ताल्पता (Anaemia), रोगीक्षीणता, निर्जलीकरण (Dehydration), मृत्यु आसन्न रोगी (Bad risk patient)
(v) रोगानुसार विशेष परीक्षा जैसे- यकृत रोगो मे (L.F.T.)
(vi) विशेष अवस्थायें- उदर के शल्यकर्म से पूर्व आमाशय में Ryle's tube insertion करना।
(vii) शल्यकर्म वाले स्थान पर उपस्थित बालों को एक रात्रि पूर्व काटकर एन्टीसेप्टिक सॉल्यूशन से साफकर बाँध दें।
(viii) शल्यकर्म से एक रात्रि पूर्व रोगी को विरेचक औषधि (Laxative) दें। तथा शल्य कर्म से 3-4 घण्टे पूर्व संशोधन बस्ति (Soap water enema) दें।

Scanned with CamScanner

(B) चिकित्सा सम्बन्धी → (i) हीन बल तथा क्षीण रोगियों को शल्यकर्म से पूर्व, शल्यकर्म योग्य बनाने के लिये (Fluid and electrolyte therapy) दें। एवं क्षीण रोगियों को पोषक आहार (Protein) दें।

(ii) मधुमेह रोगियों की आवश्यक चिकित्सा शल्यकर्म से पूर्व ही कर लें।

(iii) शोथादि होने पर शोथनाशक उपक्रम या (Antibiotics & Anti inflammatory drug) द्वारा चिकित्सा करें।

(C) उपकरण संबंधित → (i) शल्यकर्म सम्बन्धित यन्त्र, शस्त्र, पिचु, प्लोत, सूत्र (Thread), कवलिका (Gauze) इत्यादि को Sterilize कर लें।

(ii) शल्यकर्म में प्रयुक्त होने वाले क्षार, दाहक पदार्थ (Caustics) अग्नि (Cautery), जाम्बवोष्ठ, जलौका, शृंग इत्यादि आवश्यक वस्तुओं को एकत्र कर लें।

(iii) आवश्यकतानुसार घृत, तैल, कषाय या Antiseptics इत्यादि का पहले से ही प्रबंध कर लें।

(iv) परिचारक (Paramedical staff) का पहले से ही प्रबंध कर लें।

(D) शल्य कक्ष संबंधित → (i) शल्य कर्म कक्ष में पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिये।

(ii) शल्यकर्म शय्या (Operation table) पर्याप्त ऊँची एवं आरामदायक होनी चाहिये।

(iii) शल्यकर्म कक्ष को धूपनादि क्रियाओं द्वारा पूर्ण रूप से विशुद्ध (निर्जीवाणुकरण) कर लेना चाहिये।

(iv) शल्य चिकित्सक को निर्जीवाणुकृत वस्त्र एवं Mask तथा Cap & gloves इत्यादि का प्रयोग भली भाँति करना चाहिये

Scanned with CamScanner

(2) प्रधान कर्म ⇒ (A) देव पूजन (Prayers for Success)

(B) संज्ञाहरण ⇒ रोगी को शल्यकर्मानुसार सार्वदैहिक- या स्थानीय संज्ञाहरण (General or Local-Anaesthesia) देना चाहिये। (प्राचीन काल में सुरापान कराया जाता था)

(C) रोगी की मुद्रा (Position) ⇒ शल्यकर्मानुसार रोगी की मुद्रा निर्धारित की जानी चाहिये। यथा -

(i) उदरगत शल्य कर्म में - (Supine position)
(ii) वृक्कगत शल्य कर्म में - (Right or Left Lateral position)
(iii) भगादि के शल्य कर्म में - (Lithotomy position)
(iv) श्रोणिगत शल्य कर्म में - (Trendlenburg position)
इत्यादि।

(C) मुख्य शल्य कर्म (Main Operation) ⇒ इसमें मुख्य रूप से छेदन, भेदन, लेखन, वेधन, एषण, आहरण, विस्त्रावण एवं सीवन इत्यादि आठ (8) कर्मों का विशेष रूपसे प्रयोग किया जाता है।

आचार्य वाग्भट्ट ने इन 8 कर्मों के अतिरिक्त 5 अन्य कर्मों का भी मुख्य शल्यकर्मों में वर्णन किया है। यथा -

(1) उत्पाटन
(2) कुट्टन
(3) मन्थन
(4) दहन
(5) ग्रहण

Scanned with CamScanner

(3) पश्चात कर्म ⇒ (A) चिकित्सा संबंधी
(B) आहार संबंधी
(C) विहार संबंधी
(D) उपद्रव संबंधी

(A) चिकित्सा संबंधी ⇒ (i) शल्य कर्म के पश्चात व्रण को क्वाथ या Spirit इत्यादि जीवाणुहर द्रव्य से साफ करके घृत, शहद इत्यादि लगाकर मोटी-कवलिका रख कर पट्टी बाँधे।
(ii) व्रण को तीसरे दिन या ऋतु अनुसार शीघ्र बंध खोलकर पूय इत्यादि दोषों को देखे। पूय रहने पर कषाय (पंचक्षीरीवृक्ष) या पूय विरोधी (Antiseptic) द्रव्यों से उपचार करें।
(iii) धूपन एवं मंत्रादि द्वारा चिकित्सा करें। (गुग्गुल, सालादिसे)
(iv) वेदनाशामक औषधियाँ (Analgesics) ⇒ आहफेनादि तथा स्थानीय वेदना शमनार्थ मुलेठी और घृत का प्रयोग कर स्वेदन दें।
(v) व्रण को संक्रमण से बचाने के लिये प्रतिजीवाणु तथा पूयविरोधी (Antibiotics and Antiseptics) द्रव्यों का प्रयोग करना चाहिये।
(vi) व्रण रोपण के पश्चात उत्पन्न व्रणवस्तु में कोई विकृति शेष रहने पर "वैकृतवापहं" उपक्रम के द्वारा चिकित्सा करें।
(vii) मल, मूत्र एवं वायु के वेगावरोध की स्थिति में संबंधित कारण का पता लगाकर आवश्यक चिकित्सा करें।

(B) आहार संबंधी ⇒ आहार की व्यवस्था विशिष्ट शल्यकर्म अनुसार ही होनी चाहिये जैसे —
(i) हृद्रोदर के सदृश उदर के अन्य बड़े शल्य कर्म में कुछदिन तक मुख से आहार नहीं देना चाहिये (जब तक कि आंत्रगति न होने लगे) - ऐसी अवस्था में Intravenous Glucose, Vitamins दें।
(ii) सार्वदैहिक संज्ञाहर देने के बाद रोगी के होश में आने के 4 घंटे बाद तक मुख से कोई आहार न दें।

Scanned with CamScanner

(iii) छोटे शल्य कर्मों में रोगी के होश में आने पर थोड़ा तरलपदार्थ दिया जाना चाहिये।
(iv) शल्यकर्म के पश्चात मद्य, अम्ल एवं रूक्ष, तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन निषेध है।

(C) <u>विहार सम्बन्धी</u> ⇒ (i) अस्थिगत शल्य कर्म के बाद रोगी को पूर्ण विश्राम देना चाहिये।
(ii) अन्य बड़े शल्यकर्मों के पश्चात रोगी के सामर्थ्य अनुसार जल्दी बैठाना एवं चलाना चाहिये इससे शय्याजव्रण (bed sore) जैसे उपद्रवों का भय नहीं रहता है।
(iii) रोगी को धूप, धूल, धूम्र, विषमासन में बैठना, व्यायाम मैथुन, हर्ष, क्रोध इत्यादि पूर्ण बल आने तक निषेध हैं।

(D) <u>उपद्रव सम्बन्धी</u> ⇒ उपद्रव दो प्रकार के होते हैं।

(i) <u>व्रण के उपद्रव</u> ⇒ दुष्ट व्रण के लक्षण जैसे- विकृत गंध, स्त्राव एवं वेदना इत्यादि ही व्रण के उपद्रव होते हैं। रक्तस्त्राव होने पर उपयुक्त विधि से रोकना चाहिये। सीवन स्थान पर पूय होने पर, विसर्प, व्रण के फट जाने पर या अत्यधिक व्रणवस्तु बनने पर (Keloid formation) आदि उपद्रवों में उपयुक्त चिकित्सा करें।

(ii) <u>व्रणित के उपद्रव</u> ⇒ ज्वर, अतिसार, मूर्च्छा, हिक्का, छर्दि, तृष्णा, आरोचक, श्वास एवं कासादि उपद्रवों की तुरन्त चिकित्सा करनी चाहिये। अन्यथा रोगी की मृत्यु होने का भय रहता है।

Scanned with CamScanner